P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-3* ISSUE-10* January 2019
E: ISSN NO.: 2455-0817 *Remarking An Analisation*

# व्यक्तित्व आत्मप्रत्यय एवं पारिवारिक वातावरण के संबंध मे संस्कृत विद्यालय के छात्रों के नैतिकतार्किकता का अध्ययन

**दिलीप कुमार झा**
प्रोफेसर,
शिक्षाशास्त्र विभाग,
प्रज्ञा कॉलेज ऑफ एजुकेशन,
बहादुरगढ़, हरियाणा

**सारांश**

मानव मूल्य सूची मानवता की एक साझा पूँजी है और एक ऐसी अनवरत यात्रा है जो काल के पड़ावों को पूरा करके निरंतर आगे बढ़ती रहती है। धर्म हो कला हो अथवा संस्कृति, सबके लिए यह एक अन्तस्सलिला का कार्य करती है। विश्व की मुख्य विचारधाराएँ, दार्शनिक चिन्तन और साहित्यिक कृतियाँ इससे प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकती। इसे पाकर व्यक्तित्व में चमक आती है, इतिहास को प्रमाणिकता मिलती है, और आत्म प्रत्यय एवं पारिवारिक वातावरण सही दिशा की ओर बढ़ता है। यह इन्सानियत और हैवानियत के बीच की एक विभाजक रेखा है। जो समाज नैतिकता से जितना दूर है, मानवता एवं इन्सानियत से भी वह उतना ही दूर है।

**मुख्य शब्द :** नैतिकतार्किकता, व्यक्तित्व, आत्म प्रत्यय, पारिवारिक वातावरण, संस्कृतविद्यालय, छात्र एवं छात्राएं।

**प्रस्तावना**

प्रत्येक समाज शान्ति और व्यवस्था बनाये रखने के लिए एक विशिष्ट आचार–पद्धति निर्धारित करता है। समूचे समाज द्वारा स्वीकृत यह विशिष्ट आचार–पद्धति धीरे–धीरे एक सुस्पष्ट एवं सुनिष्चित व्यवस्था का रूप धारण कर लेती है। तब इसे मानवमूल्य की संज्ञा दी जाती है। मूल्य का शाब्दिक अर्थ है– उपयोगिता, वांछनीयता, महत्व। सामान्यतः किसी समाज में जिन आदर्शों को महत्व दिया जाता है और जिनसे उस समाज के व्यक्तियों का व्यवहार निर्देशित एवं नियन्त्रित होता है उन्हे उस समाज के मूल्य कहते हैं। परन्तु भिन्न–भिन्न अनुशासनों में इन्हें भिन्न–भिन्न रूप में लिया गया है और अभी तक इनके विषय में कोई सर्वमान्य अवधारणा निश्चित नहीं हो सकी है।

दर्शनशास्त्र में मनुष्य के जीवन के प्रति दृष्टिकोण को मूल्य की संज्ञा दी जाती है। वेद मूलक दर्शनों के अनुसार मानव जीवन का चरम लक्ष्य मोक्ष है और चार्वाक तथा आजीवक दर्शनों के अनुसार – भौतिक सुख–भोग। भारतीय दार्शनिकों की दृष्टि से मोक्ष और भोग दो भिन्न मूल्य है तभी तो मोक्ष में विश्वास रखने वालों का व्यवहार परमार्थ केन्द्रित होता है और भोग में विश्वास रखने वालों का स्वार्थ केन्द्रित।

धर्मशास्त्र में नैतिक नियमों को मूल्य माना जाता है। हम जानते हैं कि प्रत्येक धर्म के कुछ नैतिक नियम होते हैं और मनुष्य को उनका पालन जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में करना होता है। जब ये नियम मनुष्य के व्यवहार को नियन्त्रित एवं निर्देशित करने लगते हैं तब ये उसके लिए मूल्य बन जाते हैं। उदाहरण के लिए जैन धर्म को लीजिए। जैन धर्म में अहिंसा को सर्वप्रमुख नैतिक नियम माना गया है। जैन धर्म के अनुयायियों से यह अपेक्षा की जाती है कि वे कर्म के सभी क्षेत्रों में इस नियम का पालन करें। उनके लिए अहिंसा सर्वप्रमुख मूल्य है।

मानवशास्त्री मूल्यों को सांस्कृतिक लक्षणों के रूप में स्वीकार करते हैं। उनकी दृष्टि से संस्कृति और मूल्य अभिन्न होते हैं, कोई भी संस्कृति अपनी मूल्यों से ही पहचानी जाती है। उदाहरण के लिए हिन्दू संस्कृति को लीजिए। यह चार पुरूषार्थ (धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष) पाँच महाव्रतों (सत्य, अहिंसा, अस्तेय, अपरिग्रह और ब्रहाचर्य) की संस्कृति है। सामान्यतः इन्ही के आधार पर हिन्दू समाज के व्यक्तियों का व्यवहार निर्देशित होता है। अतः ये ही हिन्दू समाज के मूल्य हैं।

इस युग में मूल्यों पर सबसे अधिक चिन्तन मनोवैज्ञानिकों ने मूल्यों को मनुष्य की रूचियों अभिवृत्तियों और पसन्दों के रूप में लिया है। हम जिन

मापदण्डों को पसन्द करते हैं और महत्व देते हैं और जिनके आधार पर हम अपना व्यवहार निश्चित करते हैं वह ही हमारे लिए मूल्य होते हैं।

अब यदि हम मूल्यों के सन्दर्भ में दार्शनिकों, धर्मशास्त्रियों, मानवशास्त्रियों, मनोवैज्ञानिकों और समाजशास्त्रियों के दृष्टिकोणों पर समग्र रूप से विचार करे तो यह निष्कर्ष निकलता है कि हर समाज की अपनी एक संस्कृति होती है। उसके कुछ विश्वास, आदर्श, सिद्धान्त, नैतिक नियम और व्यवहार मानदण्ड होते हैं और समाज के व्यक्ति इनको अपनी पसंद के अनुसार महत्व देते हैं और इस महत्व के आधार पर उनका व्यवहार निर्देशित एवं नियन्त्रित होता है। इस प्रकार किसी समाज के विश्वास, आर्दश, सिद्धान्त, नैतिक नियम और व्यवहार मानदण्ड अपने में मूल्य नहीं होते अपितु जब इन्हें समाज के व्यक्तियों द्वारा महत्व प्राप्त होता है और उनसे व्यक्तियों का व्यवहार निर्देशित एवं नियन्त्रित होता है तब ये उनके मूल्य कहलाते हैं।

**नैतिकतार्किकता**

नैतिकतार्किकता का विकास एक प्रक्रिया है यहॉ व्यक्ति उचित और अनुचित का निर्णय अपने चेतन स्तर पर लेता है। बच्चा जन्म के समय नैतिक विहीन ही होता है। व्यक्ति की नैतिकतार्किकता किसी भी परिस्थिति में विभिन्न विकल्पों में से एक का चयन करना नैतिकतार्किकता के स्वरूप को दर्शाता है। यह नैतिकतार्किकता दस सार्वभौमिक नैतिक मूल्य पर आधारित होता है जो नैतिकदुविधा से संबद्ध होता है। 1. दण्ड, 2. सम्पत्ति, 3. स्वस्नेहपात्र के प्रति निर्णय, 4. अधिकार के प्रति निर्णय, 5. कानून व्यवस्था, 6. जीवन, 7. स्वतंत्रता, 8. न्याय, 9. सत्य, 10. लिंग।

नैतिक तर्क मूल्य आधारित वह तर्क है जो नैतिक दुविधा से बाहर निकलने हेतु एक व्यक्ति संबंधित परिस्थिति पर लागू करता है। लारेन्स कोलवर्ग (1927–1987) के नैतिक विकास के छः चरण है जिन्हे आसानी से पहचाना जा सकता है। इन छः चरणों में से प्रत्येक चरण नैतिक दुविधाओं को सुलझाने अपने पूर्वचरण से अधिक परिपूर्ण है। प्योजे की तरह कोलवर्ग ने पाया कि नैतिक विकास कुछ चरणों में होता है कोलवर्ग ने पाया कि ये चरण सार्वभौतिक होते हैं। बच्चों के साथ बीस साल तक एक विशेष प्रकार के साक्षात्कार का प्रयोग करने के बाद कोलवर्ग इन निर्णयों पर पहुंचे।

कोलवर्ग के कार्य को जेम्स रेस्ट महोदय ने आगे बढ़ाया, जेम्स रेस्ट के अनुसार किसी विशेष परिस्थिति में जो नैतिक व्यवहार घटित होता है उसमें निम्नलिखित तत्व समाहित होते हैं।

1. इस प्रकार का व्यवहार जो अन्य व्यक्तियों के लिए हितकारी है।
2. सामाजिक मान्यता के अनुसार व्यवहार का नैतिक स्तर हो।
3. सामाजिक व्यवस्था का आत्मानुभूति करण।
4. आत्मग्लानि की भावना, न्याय के विषय में तर्क परहित का महत्व।

रेस्ट महोदय ने कोलवर्ग के छः आयामों के स्थान पर द्वितीय स्तर से प्रारंभ किया डी0 आई0टी0 के अनुसार यह आयाम निम्नलिखित हैं – 2,3,4,5ए, 5बी, 6, इसका कारण है कि कोई भी पन्द्रह वर्षीय छात्र नैतिकता के प्रथम स्तर पर नहीं होता है। इस लिए वह प्रथम स्तर को स्वीकार नहीं करते हैं। पॉचवे स्तर को दो भागों में विभाजित किया 5ए एवं 5बी। 5ए का अर्थ है – सामाजिकानुबन्धन सम्बद्ध एवं 5बी का अर्थ है – मानवता सम्बद्ध नैतिकता। डी का अर्थ है – निरर्थक एवं ए का अर्थ है – समाज विरोधी कथन।

इस प्रकार यह स्पष्ट होता है कि नैतिकतर्क मूल्य आधारित वह तर्क है जो नैतिक दुविधा से बाहर निकालने हेतु एक व्यक्ति संबंधित परिस्थिति पर लागू करता है।

**व्यक्तित्व**

व्यक्तित्व व्यक्ति के भिन्न–भिन्न शीलगुणों का एक ऐसा गत्यात्मक संगठन होता है जिसके कारण व्यक्ति का व्यवहार तथा विचार किसी भी वातावरण में अपूर्व समायोजन की क्षमता निर्धारित करता है। प्रस्तुत शोधकार्य में व्यक्तित्व से अभिप्राय कैटल द्वारा निर्मित H.P.S.S. परीक्षण से प्राप्त प्राप्तांक से है।

**आत्मप्रत्यय**

व्यक्तिगत प्रत्यक्षीत अथवा स्वयं के प्रति विचारों को व्यक्ति की अवधारणा या प्रत्यय कहते हैं। आत्म उन सभी वस्तुओं का संयोग है जिसको व्यक्ति मे या मुझे कहकर संबोधित करता है। आत्मप्रत्यय स्वयं की संवेदना स्वयं के बारे में विचार से संबंधित है। व्यक्ति के व्यवहार योग्यताओं और गुणों के संबंध में उसकी अभिवृति निर्णयों और मूल्यों के योग को ही आत्म प्रत्यय कहते हैं।

**पारिवारिक वातावरण**

पारिवारिक वातावरण से तात्पर्य उस परिवेश जो परिवार के भौतिक एवं जैविक संबंधो को न केवल आवृत्त किए हुए है बल्कि उसके प्रत्यक्ष प्रभाव से परिवार का स्वरूप एवं प्रकृति भी निर्धारित होती है। सरल भाव में पारिवारिक वातावरा से तात्पर्य सामाजिक अभिकरण परिवार को आवृत किए उन क्रियाओं से है जो प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करती है।

**अध्ययन के उद्देश्य**

प्रस्तुत शोधकार्य के निम्नलिखित उद्देश्य हैं :–

**सामान्य उद्देश्य**

संस्कृत विद्यालय के छात्र एवं छात्राओं के नैतिकतार्किकता के स्तर का अध्ययन करना।

**विशिष्ट उद्देश्य**

संस्कृतविद्यालय के छात्र एवं छात्राओं के नैतिकतार्किकता एवं व्यक्तित्व के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन करना।

1. संस्कृतविद्यालय के छात्र एवं छात्राओं के नैतिकतार्किकता एवं आत्म प्रत्यय के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन करना।
2. संस्कृतविद्यालय के छात्र एवं छात्राओं के नैतिकतार्किकता एवं पारिवारिक वातावरण के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन करना।

3. संस्कृतविद्यालय के छात्र एवं छात्राओं के नैतिकतार्किकता स्तर का तुलनात्मक अध्ययन करना।
4. संस्कृतविद्यालय के विविध आयुवर्ग के छात्र एवं छात्राओं के नैतिकतार्किकता स्तर का तुलनात्मक अध्ययन करना।

**समस्या कथन**

व्यक्तित्व आत्म प्रत्यय एवं पारिवारिक वातावरण के संबंध में संस्कृत विद्यालय के छात्रों के नैतिकतार्किकता का अध्ययन।

**पारिभाषिक शब्दावली**

**नैतिकतार्किकता**

नैतिकतार्किकता से अभिप्राय जेम्स रेस्ट मोनोसोटा विश्वविद्यालय अमेरिका द्वारा निर्मित डिफाईनिंग ईश्यूजटेस्ट द्वारा प्राप्तांक से है।

**व्यक्तित्व**

व्यक्तित्व से अभिप्राय प्रो0 आर0बी0 कैरल द्वारा निर्मित एवं डॉ. एस0डी0 कपूर, एस0एस0 श्रीवास्तव एवं जी0एन0पी0 श्रीवास्तव द्वारा अनुदित हाईस्कूल व्यक्तित्व मापनी द्वारा (H.S.P.S.) प्राप्त प्राप्तांक से है।

**आत्मप्रत्यय**

आत्मप्रत्यय से अभिप्राय डॉ0 जे0जी0 शौरी द्वारा निर्मित ''आत्मप्रत्यय मापनी'' द्वारा प्राप्त प्राप्तांक से है।

**परिवारिक वातावरण**

पारिवारिक वातावरण से अभिप्राय शोधकर्ता द्वारा स्वनिर्मित ''पारिवारिक वातावरण परीक्षण'' द्वारा प्राप्त प्राप्तांक से है।

**संस्कृतविद्यालय**

संस्कृत विद्यालय से अभिप्राय ऐसे विद्यालय से है जिनके अध्ययन–अध्यापन की भाषा संस्कृत भाषा है।

**शोध का सीमांकन**

शोधकार्य में समस्याओं के विभिन्न तत्वों के विश्लेषणोपरांत उसकी सीमा निर्धारित की जाती है क्योंकि शोधसमस्या सामान्य रूप से व्यापक होती है। प्रस्तुत शोधकार्य से संबंधित जो सीमा निर्धारित की गई है वह निम्नलिखित है :–

1. सम्पूर्ण संस्कृत विद्यालय के स्थान पर केवल दिल्ली स्थित संस्कृत विद्यालयों को सम्मिलित किया गया।
2. सभी कक्षा के छात्रों के स्थान पर केवल उपशास्त्री कक्षा (10+2) के छात्र एवं छात्रा को लिया गया।
3. न्यादर्श के रूप में केवल 400 छात्र–छात्राओं को सम्मिलित किया गया।
4. नैतिकतार्किकता के अध्ययन के लिए जेम्स रेस्ट द्वारा निर्मित 'डिफाईनिंग ईश्यूजटैस्ट' का प्रयोग किया गया।

**साहित्यावलोकन**

प्रस्तुत शोधकार्य से संबंधित पूर्व में कुछ शोधकार्य किये गये है जो निम्नलिखित हैः–

चौधरी विपाशा 2008 ने दिल्ली स्थित विद्यालयों के छात्र–छात्राओं का व्यक्तित्व एवं पारिवारिक वातावरण के संबंध में नैतिकतार्किकता का अध्ययन शोध में पाया कि व्यक्तित्व एवं पारिवारिक वातावरण नैतिकतार्किकता को प्रभावित करती है।

कुमार नरेन्द्र–2010 ने जिला बहादुगढ़, हरियाणा के छात्र–छात्राओं के नैतिकमूल्य एवं नैतिकतर्क का अध्ययन किया और पाया कि छात्र एवं छात्राओं के नैतिक मूल्य एवं नैतिकतर्क के संबंध में विचार अलग–अलग हैं।

विजय लक्ष्मी –2012 ने दिल्ली के तीन विद्यालयों के छात्र–छात्राओं पर नैतिकतार्किकता का अध्ययन किया और पाया कि शिक्षकों का व्यवहार छात्रों के नैतिक मूल्य एवं नैतिक तर्क को प्रभावित करता है।

वन्दना –2014 ने विद्यालय एवं पारिवारिक वातावरण के संबंध में नैतिकतार्किकता एवं नैतिक मूल्य का अध्ययन किया और पाया कि पारिवारिक वातावरण का प्रभाव लड़कों की अपेक्षा लड़कियों पर अधिक होता है।

भारद्वाज संजय–2015 ने व्यक्तित्व एवं पारिवारिक वातावरण के संबंध में माध्यमिक विद्यालयों के छात्र–छात्राओं के नैतिकतार्किकता का अध्ययन शोध में पाया कि पारिवारिक वातावरण नैतिकतार्किकता को प्रभावित करती है।

उपाध्याय एस0आर0–2016 ने बुद्धि एवं पारिवारिक वातावरण के संबंध में नैतिकतर्क का अध्ययन शोधकार्य में पाया कि छात्रों की अपेक्षा छात्राओं की नैतिकतर्क पारिवारिक वातावरण से अधिक प्रभावित हुई है।

**न्यादर्श चयन**

प्रस्तुत शोधकार्य में स्तरीकृत यादृच्छिक न्यादर्श द्वारा दो स्तरों पर न्यादर्श चयन किया गया प्रथम स्तर पर दिल्ली में संचालित संस्कृत विद्यालयों में से 20 विद्यालयों का चयन किया गया तथा दूसरे स्तर पर संस्कृत विद्यालय के उपशास्त्री (ग्यारहवी, बारहवी) कक्षा में उपस्थित सभी छात्र–छात्राओं को अध्ययन में सम्मिलित किया गया। प्रथम दिन सभी छात्र–छात्राओं के नैतिकतार्किकता से संबंधित प्रश्नावली एवं दूसरे दिन अन्य प्रश्नावली दी गयी। इस प्रकार बीस विद्यालयों में 420 छात्र एवं छात्राओं को प्रश्नावली दी गयी जिसमें 400 प्रश्नावली पूर्णरूप से शुद्ध एवं स्पष्ट रूप से भरी हुई थी।

**शोध परिकल्पना**

प्रस्तुत शोधकार्य में शून्य परिकल्पना का प्रयोग किया गया है जो निम्नलिखित है :–

1. संस्कृत विद्यालय छात्रों के नैतिकतार्किकता स्तर तथा व्यक्तित्व के मध्य कोई सार्थक संबंध नहीं है।
2. संस्कृत विद्यालय छात्रों के नैतिकतार्किकता स्तर तथा आत्म प्रत्यय के मध्य कोई सार्थक संबंध नहीं है।
3. संस्कृत विद्यालय छात्रों के नैतिकतार्किकता स्तर तथा पारिवारिक वातावरण के मध्य कोई सार्थक संबंध नहीं है।
4. संस्कृत विद्यालय छात्र और छात्राओं के नैतिकतार्किकता स्तर के मध्य कोई सार्थक संबंध नहीं होता है।
5. विविध आयुवर्गों के छात्र एवं छात्राओं के नैतिकतार्किकता स्तर के मध्य कोई सार्थक सम्बन्ध नहीं होता है।

**उपकरण**

प्रस्तुत शोधकार्य में चार प्रश्नावली का प्रयोग किया गया। उसमें तीन उपकरण मानवीकृत परीक्षण एवं

एक शोधकर्ता द्वारा स्वनिर्मित है। प्रस्तुत अनुसंधान कार्य में प्रयुक्त उपकरण निम्नलिखित है :–

1. मोनोसोटा विश्वविद्यालय अमेरिका के प्रोफेसर जेम्स रेस्ट द्वारा निर्मित डिफाईनिंग ईश्यूज टेस्ट का नैतिकतार्किकता स्तर के मापन हेतु प्रयोग किया गया।
2. व्यक्तित्व मापन हेतु कैटल द्वारा निर्मित (H.S.P.S.) परीक्षण का डॉ0 एस0डी0 कपूर, एस0एस0 श्रीवास्तव एवं जी0एन0पी0 श्रीवास्तव द्वारा अनुदित ''हाईस्कूल व्यक्तित्व मापनी'' का प्रयोग किया गया।
3. आत्म प्रत्यय मापन हेतु डॉ0 जे0पी0 शौरी द्वारा निर्मित ''आत्म प्रत्यय मापनी'' का प्रयोग किया गया।
4. परिवारिक वातावरण के मापन हेतु शोधकर्ता द्वारा स्वनिर्मित ''आत्म प्रत्यय परीक्षण'' का प्रयोग किया गया।

**प्रस्तुत शोध प्रबन्ध में जिन सांख्यिकीय विधियों का प्रयोग किया गया है वे निम्नलिखित हैं :–**

**सहसम्बन्ध (Correlation)**

$$r = \frac{\frac{\sum X^1\, Y^1}{N} - CY \;x\; CX}{QY \;x\; QX}$$

**मध्यमान (Mean)**

$$\sum \frac{FX}{N}$$

**मानक विचलन (Standard Deviation )**

$$\text{S.D.} \sqrt{\sum \frac{Fd^2}{N} - \left(\sum \frac{Fd}{N}\right)^2 \quad x\, I}$$

**विचलन की प्रामाणिक त्रुटि (S.E.O.)**

$$\text{S.D.} \sqrt{\frac{Q1^2}{N1} + \frac{Q2^2}{N2}}$$

$$= \sqrt{\frac{01^2}{N} + \frac{02^2}{N2}}$$

**क्रांतिक निष्पत्ति (C.R.)**

$$C.R. = \frac{M1 - M2}{S.E.D.}$$

**परिणाम एवं व्याख्या**

1. छात्र–छात्राओं के नैतिकतार्किकता स्तर एवं व्यक्तित्व के मध्य सार्थक संबंध नहीं है। (r=0.045) .05 स्तर पर परिणाम सार्थक नहीं हैं।
2. छात्र–छात्राओं के नैतिकतार्किकता स्तर तथा आत्म प्रत्यय के मध्य सार्थक सहसंबंध है। (r=0.107) .05 स्तर पर सार्थक हैं।
3. छात्र–छात्राओं के नैतिकतार्किकता स्तर एवं पारिवारिक वातावरण के मध्य सार्थक सहसंबंध है। (r=0.107) .05 स्तर पर सार्थक हैं।
4. छात्र–छात्राओं के नैतिकतार्किकता स्तर के मध्य सार्थक अन्तर होता है। छात्रों का मध्यमान 28.82 एवं छात्राओं का मध्यमान 31.61 है तथा क्रान्तिकनिष्पत्ति 2.33 है। जो .01 स्तर पर सार्थक हैं।
5. विविध आयुवर्ग के छात्र एवं छात्राओं का नैतिकतार्किकता स्तर के मध्य सार्थक अन्तर होता है। निम्नआयु के छात्रों का मध्यमान 5.25 तथा उच्च आयु के छात्रों का मध्यमान 1.72 प्राप्त हुआ है तथा क्रान्तिकनिष्पत्ति 3.05 है, जो .01 स्तर पर सार्थक हैं।

**व्याख्या**

प्रस्तुत शोधकार्य में व्यक्तित्व का नैतिकतार्किकता स्तर के साथ सार्थक सहसम्बन्ध नहीं है क्योंकि व्यक्ति अपने व्यक्तित्व के अनुसार पहचान बनाने के लिए नैतिकतार्किता तदनुकुल प्रभावित होती है। आत्मप्रत्यय स्वयं के विषय में दृष्टिकोण को इंगित करता है। प्रत्येक व्यक्ति अपने आत्मप्रत्यय को नैतिकविचारों से पूर्ण रखना चाहता है। पारिवारिक वातावरण व्यक्ति के नैतिकतार्किकता स्तर को प्रभावित करती है। व्यक्ति के स्वयं का निर्णय उसके परिवार से प्रभावित होता है। माता–पिता, दादा–दादी इत्यादि सभी परिवार के श्रेष्ठ व्यक्ति बच्चे के नैतिक विकास को प्रभावित करती है। छात्र की अपेक्षा छात्राएं अधिक नैतिकवती होती है। उसमें सहानुभूति परोपकार एवं ममता आदि गुण जन्म से ही विद्यमान होती है। अतः नैतिक निर्णय लेते समय इन बातों को अधिक ध्यान में रखती है। कम उम्र के छात्र उच्च आयु वर्ग के छात्रों की अपेक्षा अधिक नैतिकवान होते है। कम उम्र के बच्चे किसी भी अनुकरणीय आचरण को देखकर उनका बिना सोचे समझे अनुकरण करते हैं जबकि उच्च आयु वर्ग के छात्रों का निर्णय स्वकेन्द्रित होता है।

**निष्कर्ष**

आज मानवमूल्यों का तेजी से ह्रास हो रहा है मानव धर्म के बुनियादी मूल्य तथा शांति, शौहार्द सहिष्णुता त्याग, प्रेम व स्नेह आज कमजोर होते जा रहे हैं। भौतिकवाद की आँधी से आज विश्व का कोई देश अछूता नहीं है। भारत भी अपवाद नहीं है। सम्पूर्ण विश्व इस अंधी दौर में मानवता व मानवमूल्यों को पीछे छोड़ चुका है भारतवर्ष ने निस्सन्देह आज विज्ञान व तकनीकी के क्षेत्र मे असीमित उन्नति हासिल की है। भारतीय तकनीकी संस्थानों यथा आई.आई.टी. व आई.आई.एम. ने विश्वस्तरीय वैज्ञानिकों, इंजीनियरों, चिकित्सकों एवं प्रबंधकों का निर्माण किया है जिनकी ख्याति सारे विश्व में व्याप्त है। इसी प्रकार की उपलब्धियाँ हमने अन्तरिक्ष उड़ान, रक्षा–तकनीकी एवं परमाणु–उर्जा क्षेत्र में हासिल की है। भारत की गिनती इन समस्त क्षेत्रों में चुनिन्दा देशों में होता है। किन्तु इस उन्नति का दूसरा पहलू निराश करने योग्य है।

प्राचीनकाल का गौरवमयी इतिहास जो हमारी धरोहर है, हमे विश्व की प्राचीन संस्कृति का दर्जा देते हैं। हमारे उपनिषदों ने हमें '' बसुधैव कुटुम्बकम्'' अर्थात सारा संसार मेरा परिवार है, सिखाया है। इसके बाबजूद हम कभी धर्म, कभी क्षेत्र जाति व यहाँ तक की भाषा के नाम

पर लड़ते हैं मन्दिर–मस्जिद व अन्य धार्मिक स्थान, गरीबी, महामारी, बेरोजगारी सामाजिक अन्याय व अकाल से भी बड़े मुद्दे है। सम्पूर्ण विश्व आज हिंसा एवं आतंकवाद की विभीषिका से जल रहा है। ऐसे में शांति व सदभाव की ओर ध्यान जाना स्वाभाविक है। विश्व का कोई ऐसा देश नहीं है जो भय, भूख वैमनस्य एवं पर्यावरण संकट की पीड़ा को न झेल रहा हो। अतः ऐसे मे मानव बनना और मानवमूल्य आधारित शिक्षा के लिए आवाज उठाना शांति की दिशा में एक पग माना जा सकता है। आज विकासशील भारत से विकसित भारत में तब्दील होने के लिए लोगों में मानवमूल्यों के साथ ही नैतिक मूल्यों का सृजन किया जाना परमावश्यक है।

इस विषय पर वर्तमान भारत के सन्दर्भ में मेरा अपना कुछ विचार है। भारत में अनेक समाज है और इनके आदर्श एवं व्यवहार मानदण्ड भिन्न–भिन्न हैं। अतः इन सबको मूल्यों की सूची में नहीं रखा जा सकता। परन्तु समाज कोई भी हो वह तीन मूलभूत मूल्यों पर आधारित होता है – प्रेम, सहानुभूति और सहयोग। इनके अभाव में कोई समाज जीवित नहीं रह सकता। तब वर्तमान भारत में इन मूल्यों की शिक्षा दी जानी चाहिए। इससे सबसे बड़ा लाभ यह होगा कि एक दिन भारत की सम्पूर्ण जनता ''भारतीय समाज'' के रूप में गुंथ जाएगी।

भारत में अनेक संस्कृतियों के लोग रहते हैं। आज हमारे देश में सबसे बड़ी आवश्यकता है सांस्कृतिक सहिष्नुता की। अतः इसे मूल्य के रूप में विकसित करना अत्यावश्यक है।

भारत में अनेक धर्मों के लोग रहते है। वर्तमान भारत में किसी धर्मविशेष पर आधारित मूल्यों की शिक्षा देना सम्भव नहीं है। पर किसी भी धर्म पर आधारित नैतिक नियमों – सत्यता ईमानदारी, और कर्तव्य परायणता की शिक्षा देने में कोई एतराज नहीं हो सकता। अतः वर्तमान समय में इन मूल्यों की शिक्षा अवश्य दी जानी चाहिए। राजनैतिक दृष्टि से हमारे देश में लोकतंत्र छः मूलसिद्धान्तों – स्वतंत्रता, समानता, भ्रातृत्व, न्याय, समाजवाद, और धर्मनिरपेक्षता पर आधारित है। तो देश के समस्त नागरिकों में इन्हे मूल्यों के रूप में विकसित करना आवश्यक है।

आर्थिक दृष्टि से हमारा देश विकासशील देश है। आर्थिक क्षेत्र में हम औद्योगीकरण की ओर बढ़ चुके हैं। दोनों ही दृष्टियों से वर्तमान भारत में 'श्रम गरिमा' की महत्ता स्वीकार करने की आवश्यकता है। अतः इसे भी मूल्यों के रूप में विकसित करना चाहिए।

राष्ट्रीय दृष्टि से इस समय देश में राष्ट्र समपर्ण की भावना का बड़ा अभाव है। अतः आज भारत के प्रत्येक नागरिक में ''राष्ट्र समर्पण'' की भावना को मूल्य के रूप में विकसित करना आवश्यक है।

हम समझते है कि वर्तमान भारत में उपरोक्त मूल्यों की शिक्षा देने में किसी को कोई आपत्ति नहीं होनी चाहिए। अतः इनकी शिक्षा दी जा सकती है। क्योंकि इनमें सभी मानवीय, नैतिक और सार्वभौमिक मूल्य समाहित है। जिस दिन भारत के लोग इन मूल्यों पर आधारित आचरण करेंगे भारत विकसित देशों की श्रेणी में आसीन होगी और यहॉ के लोग सुख शांति से जी सकेंगे।

**सन्दर्भ ग्रन्थ सूची**

1. *अग्रवाल, जे. सी.– शैक्षिक शोध का परिचय, आर्य पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 1995*
2. *आर्य, सुमित्रा – किशोरावस्था में नैतिक मूल्य, क्लासिक पब्लिकेशन*
3. *ऐडा जोसेपा, ए. बोटिस्टा – वेल्यू एजूकेशन इन रिलिजिएन्स एजूकेशन*
4. *भारती, विजय – वेल्यू ओरियन्ट एजूकेशन, नील कमल पब्लिकेशन प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली*
5. *वेस्ट जॉन डब्ल्यू – शिक्षा में शोध सातवाँ संस्करण, प्रिंटिग हॉल ऑफ इंडिया प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली, 2004*
6. *बैक, सी – वैल्यूज एवं लिविंग, ओ. आई. एस. ई. प्रेस, टोरेन्टो, 1983*
7. *भारत, धमवीर – मानव मूल्य और साहित्य, भारतीय ज्ञानपीठ, काशी, 1972*
8. *भारद्वाज, तिलक राज –मानवीय मूल्यों की शिक्षा, मित्तल पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 2001*
9. *चिट्टेवाबू, एस. वी. – वैल्यू ओरियन्टेशन ऑफ एज्यूकेशन यूनिवर्सिटी न्यूज, 8 मई, 1997*
10. *चक्रवर्ती, मोहित – वेल्यू एजूकेशन, कनिष्क पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 1997*
11. *चिताग्र, एम. जी. – एज्यूकेशन एंड ह्यूमन वेल्यू, ए. पी. एच. पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 2003*
12. *देवी, लक्ष्मी – ''एज्यूकेशन वेल्यू'', अनमोल पब्लिकेशन प्राइवेट लिमिटेड, प्रथम संस्करण, नई दिल्ली*
13. *डागर, वी. एस. एंड धुल इंदिरा –ए केस फॉर वैल्यू ओरियन्टेड एज्यूकेशन, यूनिवर्सिटी न्यूज, वॉल्यूम–35, न. 29, पृष्ठ 21, 1997*
14. *ई.एन. गावण्डे – वेल्यू ऑरेन्टेड एजूकेशन, 2004*
15. *गाँधी, एम. के. – मोरल एज्यूकेशन, ए. पी. एच. पब्लिकेशन कॉरपोरेशन, न्यू देहली*
16. *गुप्त, नत्थूलाल – मूल्यपरक शिक्षा और समाज, नमन प्रकाशन, नई दिल्ली, 2000*
17. *गांवडे, इ. एन. – मूल्य शिक्षा बुक एनक्लेव, जयपुर, 2003*
18. *गुप्त, नत्थूलाल – मूल्यपरक शिक्षा पद्धति, जयकृष्ण अग्रवाल महात्मा गाँधी मार्ग, अजमेर, 1987*
19. *गुप्त, नत्थूलाल – मानव मूल्यों की खोज, विश्वभारती प्रकाशन,नागपुर, 1986*
20. *गैरेट, ई हैनरी – शिक्षा और मनोविज्ञान में सांख्यिकी के प्रयोग, कल्याणी पब्लिशर्स, नई दिल्ली, 2010*
21. *गाँधी के. एल. एन. – वेल्यू एज्यूकेशन, ज्ञान प्रकाशन, न्यू देहली, 1993*
22. *गोयल, वी. आर. – डॉक्यूमेंट ऑन सोशल मोरल एंड स्प्रचुअल वैल्यूज इन एज्यूकेशन, न्यू देहली, एन. सी.ई.आर.टी. देहली, 1979*
23. *घोव, ए. के. –मोरल एज्यूकेशन यूनिवर्सिटी न्यूज, वॉल्यूम–35, पृष्ठ 13–14, 1997*
24. *जॉन हेलडेन – वेल्यू एजूकेशन एण्ड द ह्यूमन*

*वर्ल्ड, 2004*
25. *कोठारी, डी. एस. – कल्टीवेशन ऑफ मोरल वैल्यूज, कोठारी आयोग रिपोर्ट, 1996*
26. *कोठारी, डी. एस. – एज्यूकेशन एंड ह्यूमन वैल्यूज, टीचर्स टुडे, जुलाई, 1985*
27. *कार, एन. एन.– वैल्यू एज्यूकेशन ए फिलॉसफिकल स्टडी, द एसोसियट पब्लिशर्स 2963/2 कच्चा बाजार, अम्बाला कैन्ट*
28. *कुमार, अनिल – रिसर्च मेथडोलॉजी ऑफ एजूकेशन, अल्फा पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 2009*
29. *मोहन्ती, जगन्नाथ – इंडियन एज्यूकेशन इन द इमर्जिंग सोसायटी, स्टरलिंग पब्लिशर्स, नई दिल्ली, 1996*
30. *मोदी, विकास –नैतिक मूल्य और शिक्षा, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा*
31. *चित्तकारा, एम. जी.– एज्यूकेशन एंड ह्यूमन वैल्यूज, ए. पी. एच. प्राइवेट कॉरपोरेशन, नई दिल्ली*
32. *माट्टी हायरे – द फ्यचू र ऑफ वेल्यू इंक्वाइरी*
33. *एन. अमरसवरण – मोरल वैल्यूज ऑफ इंटरमिडिएट स्टूडेन्ट, डिस्कवरी पब्लिशिंग हाउस प्राइवेट लिमिटेड, न्यू देहली*
34. *एन. वैंकटनाथ, एन. संध्या – रिसर्च इन वेल्यू एजूकेशन*
35. *एन. वेंकटर – वेल्यू एजूकेशन*
36. *निकोला ब्रिस, रिचर्ड – एस. पी. एस. एस. फॉर साइक्लोजीस्ट ए गाइड टू डाटा एनालिसिस यूजिंग एस.पी.एस.एस फॉर विन्डोज, 2010*